(2) खा-खाकर ———— ———— ———— ———— ... बंद द्वार की।

शब्दार्थ – अहंकारी - घमंडी। सम - अंतःकरण और बाह्य इन्द्रियों पर संयम। समभावी - समानता की भावना रखने वाला। साँकल - कुंडी।

भावार्थ – कवयित्री कहती हैं – हे मनुष्य ! तू सांसारिक भोगों में लीन मत हो। भोग का तात्पर्य संसार की उन वस्तुओं से है जो मनुष्य

को आलसी बना देती है। इन वस्तुओं से मनुष्य को कुछ प्राप्त नहीं होता। और न ही इन वस्तुओं का त्याग कर त्याग और तपस्या का जीवन अपना। इससे मन में अहंकार उत्पन्न होगा। तू भोग और त्याग के बीच में जीवन जी अर्थात अपनी इंद्रियों को वश में रख। तभी तुम्हारे अन्दर भोग और त्याग के बीच समानता का भाव आ सकेगा। समानता के द्वारा ही प्रभु-प्राप्ति के बंद द्वार खुलेंगे और प्रभु से मिलन होगा।

16/12

(2)

काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर -

खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं -------- द्वार की।

प्रश्न- काव्यांश में खाने और न खाने का क्या अर्थ है?

उत्तर काव्यांश में खाने का अर्थ है- सांसारिक वस्तुओं का भोग करना और न खाने का अर्थ है सांसारिक वस्तुओं का भोग न करना।

प्रश्न 'सम खा' कवयित्री ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- 'सम खा' अर्थात् सुख-दुख एवं सांसारिक भोगों का उपभोग समान रूप से करो। कवयित्री ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि ऐसा करने से प्राणी को सांसारिक माया-मोह से मुक्ति मिल जाएगी

प्रश्न- मनुष्य कैसे अहंकारी बनेगा?

उत्तर मनुष्य न खाने से अर्थात् सांसारिक भोगों का भोग न करने से अहंकारी बनेगा क्योंकि उसमें यह भाव उत्पन्न हो जाएगा कि वह बहुत बड़ा त्यागी है।

प्रश्न 'समभावी' होने का कवयित्री क्या आधार मानती है?

उत्तर कवयित्री के अनुसार मनुष्य जब अपनी इन्द्रियों और मन को वश में कर लेता है तब

Page 4

वह समभावी हो जाता है।

प्रश्न 'खुलेगी साँकल बंद द्वार की' इससे कवि का क्या आशय है?

उत्तर उपरोक्त पंक्ति प्रयोग कवयित्री ने बुद्धि-चेतना के व्यापक अर्थ में किया है। हमारी बुद्धि जब व्यापक हो जाएगी तब ज्ञान के नेत्र खुल जाएँगे और हमारा मन-माया-मोह में नहीं फँसेगा।

प्रश्न- 'साँकल' शब्द से क्या तात्पर्य है?

उत्तर 'साँकल' शब्द से तात्पर्य माया-मोह रूपी सांसारिक बंधनों से है।